ॐ श्री गणाधिपाय नमः

भगवान श्रीकृष्ण ने श्री अरविन्द को जो वरदान दिया, उसके सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने कहा है —

"मैंने मानवता के लिए परात्पर (ईश्वर) से उतना बड़ा वरदान प्राप्त किया है जितना यह पृथ्वी माँग सकती थी।"

— — — * — — — × — — —

श्री अरविन्द को दिये गये वरदान के अनुसार :—

"शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व-लोक से एक 'भागवत शक्ति' का अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित 'मृत्यु' और असत्य के राज्य को समाप्त कर यहाँ भी भगवान के राज्य की स्थापना करेगी।"

उपरोक्त शक्~~ति~~ के अवतरण के सम्बन्ध में श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है :—

"The supramental consciousness will enter into a phase of realising power in 1967."

"Sri Aurobindo"

उपरोक्त शक्ति द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति में जो परिवर्तन लाया जावेगा, उस सम्बन्ध में श्री माँ ने कहा है :—

"Yet the road to reach there is a new road that has never before been traced, none went by that way, nor did that. It is a beginning, a universal beginning. Therefore it is an adventure absolutely unexpected and unforeseeable."

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"See the Avatars and great Vibhuties coming, arising thickly, treading each close behind the others. Are not these the signs and do they not tell us that the great Avatar of all arrives to establish the first "Satya yuga" of the "Kali"?
"India alone can build the future of mankind".

"Sri Aurobindo"

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

18th oct., 1934

"certainly, when the supramental ~~doe~~ does touch earth with a sufficiend force to dig itself in into the earth consciousness, there will be no more chance of any succes or survival of the "Asuric Maya"."

"Sri Aurobindo"

"गुरुत्वाकर्षण को न्यूटन ने शक्ति आइन्स्टीन ने जड़ता की अभिव्यक्ति कहा है। इसके कारण सभी भौतिक पदार्थ भारयुक्त हो जाते हैं। परन्तु सिद्ध-पुरुष को भार के गुणधर्म प्रदर्शित करने के लिए "विवश" कर सकने में गुरुत्वाकर्षण-शक्ति असमर्थ है। जो अपने को सर्वव्यापि आत्मा या ब्रह्मतत्व के रूप में पहचानता है, वह काल और देश की सीमा में आबद्ध नहीं रहता। सोऽहम् की शक्ति के समक्ष उनके सारे बन्धन टूट जाते हैं।"

"परमहंस श्री योगानन्द जी"

ॐ श्रीगंगाईनाथाय नमः

"राज्य मानव के अविवेकी युग से चलकर, आध्यात्मिक युग तक पहुँचने का माध्यम मात्र है।"

"श्री अरविन्द"

"मनुष्य जब मानवत्व प्राप्त करेगा तो अतिमानसिक रूपान्तर द्वारा उसका मन, प्राण और शरीर दिव्य "स्वरूप" में रूपान्तरित हो जायगा। इसी का नाम है पार्थिव-अमरत्व (Terrestrial immoratality) अर्थात् जीवनमुक्त होना।"

"श्री अरविन्द"

"जो "परमहंस-पद" प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए "रजोगुण" की प्राप्ति ही परमकल्याण-प्रद है। बिना "रजोगुण" के क्या कोई "सत्त्वगुण" प्राप्त कर सकता है। बिना भोग का अन्त हुए, योग (मिलन) हो ही कैसे सकता है। बिना वैराग्य के त्याग कहाँ से आवेगा।"

"स्वामी श्री विवेकानन्द जी"

"आत्मा" शरीर में कहाँ स्थित है ?

अत्रि ऋषि ने इसके बाद याज्ञवल्क्य से पूछा -" "जो ऐसा अनन्त, अव्यक्त आत्मा है, उसको हम कैसे जानें ?" याज्ञवल्क्य ने कहा -" यह अविमुक्त आत्मा ही उपासना योग्य है। वह अनन्त, अव्यक्त आत्मा अविमुक्त में प्रतिष्ठित है। वह अविमुक्त कहाँ प्रतिष्ठित है ? वह वरणा और नाशी के बीच में प्रतिष्ठित है। वरण और नाशी क्या हैं ? सब "इन्द्रिय-कृत" दोषों को जो दूर करता है वही वरण है और जो सब "इन्द्रिय-कृत" पापों को नाश करता है, वही नाशी कहलाता है। कहाँ है वह स्थान ? दोनों भौंओं का और नासिका का जो मिलन स्थान है। (वही वह स्थान है) यह "द्युलोक" और "परलोक" का मिलन स्थान है। इस सन्धि स्थान में ब्रह्मज्ञानी अपनी सन्ध्या की उपासना करते हैं, अर्थात् वहाँ पर ध्यान करके ब्रह्मसाक्षात्कार की चेष्टा करते हैं।"

"जाबालोपनिषद"